ग्रामीण एवं नगरीय किशोर विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि: एक विवेचना

Pushpa Tanwar, Research Scholar, Department of Education
Baba Mastnath University, Asthal Bohar, Rohtak

सार: हमारे देश की प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए छात्र शैक्षिक रूचि में सुधार करना महत्वपूर्ण है शारीरिक कक्षा के माहौल में छात्रों की शैक्षिक रूचि प्रभावित होती है। हम वैज्ञानिक निष्कर्षों की नींव देते हैं-प्रासंगिक नीति दर्शकों को ध्यान में रखते हुए और कक्षा की डिजाइन की महत्वपूर्ण विशेषताएं निर्दिष्ट करें जो छात्र शैक्षिक रूचि में सुधार कर सकती हैं, खासकर सबसे कमजोर छात्रों के लिए यादृच्छिक प्रयोगों से अकादमिक उपलब्धियों पर वर्ग के आकार के प्रभावों के बारे में हालिया साक्ष्य बताते हैं कि छोटे वर्गों के सकारात्मक प्रभाव हैं। हालांकि, इन प्रभावों का निर्माण करने वाले तंत्र के बारे में सबूत कम स्पष्ट है। कुछ विद्वानों ने तंत्र के लिए तर्क दिया है जो कम-प्राप्त करने वाले छात्रों के लिए छोटे वर्गों के अधिक प्रभाव का मतलब होगा।

मुख्य शब्द: वैज्ञानिक, प्रतिस्पर्धात्मकता, छात्र, शैक्षिक रूचि आदि।

I. परिचय

शिक्षा मनुष्य के जीवनपर्यत चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके द्वारा कोई समाज अपने सदस्यों को अपनी पूर्व संचित सभ्यता और संस्कृति से परिचित कराता है और उन्हें इस योग्य बनाता है कि वे अपनी सभ्यता एवं संस्कृति| में निरंतर विकास कर सकें। शिक्षा के द्वारा मनुष्य की जन्मजात का विकास किया जाता है। इसके माध्यम से विद्यालयों में ज्ञान कला कौशल तथा अच्छे व्यवहार का विकास किया जाता है। शिक्षा मानव की अमूल्य वस्तु है। शिक्षा समाज और मानव की आत्मा है तथा उसके विकास में सहायक है। यदि समाज मानव का दर्पण है तो मानव शिक्षा का दर्पण है। अर्थात मनुष्य जन्म से लेकर मय तक अपने जीवन में जो वृद्धि करता है जिन जिन पहलुओं का विकास करता है वह सब शिक्षा से संभव है।

शिक्षा मानव जीवन की अनिवार्य आवश्कता है। मनुष्य अपने जन्म के बाद से ही शिक्षा ग्रहण करना प्रारंभ कर देता है और शिक्षा की यह प्रक्रिया चलती रहती हैं। प्रारंभ में शिक्षा प्रदान करने का कार्य घर-परिवार एवं समुदाय कहते हैं। तत्पश्चात व्यक्ति औपचारिक साधनों जैसे विद्यालय, महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त करता है। प्रारंभ में जहां शिक्षा द्वारा बालक अपने गुरु से ज्ञान एवं सूचनाएं प्राप्त करता था, वहीं आज शिक्षा का अर्थ काफी व्यापक हो गया है। शिक्षा के द्वारा बालक का सर्वागीण विकास किया जाता है। शिक्षा मनुष्य को अपना परिवेश प्रदान करती है जहां व्यक्ति का निरंतर सर्वोतोन्मुखी विकास होता।

छात्र के सर्वतोन्मुखी विकास के उत्तरदायित्व में शिक्षक की अहम भूमिका है। जिसके फलस्वरूप शिक्षण संस्थानों का उत्तरदायित्व है कि वह अध्यापकों को सुनियोजित एवं सुगठित प्रशिक्षण प्रदान करें जिससे वह भी अपने छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे भारत में शिक्षक शिक्षा बहुत ही उपेक्षित रही यद्यपि इसका सीधा संबंध शिक्षा की गुणवत्ता से होता है। देश की वांछित प्रगति के लिए शिक्षक शिक्षा में समुचित सुधार लाना आवश्यक होता है।

बच्चे के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि बच्चे में व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं। यह देखा गया है कि एक ही विषय में एक जैसा अध्यापकों से शिक्षा ग्रहण करते हुए भी बालकों की रूचियों में विभिन्नता पायी गयी है। अधिगम के सैद्धांतिक रूप से स्पष्ट है कि बालक अपनी रूचि के अनुसार ही शिक्षण ग्रहण करता है। यह बात स्पष्ट है कि प्रभावी अधिगम बच्चे की रूचियों के विरुद्ध नहीं किया जा सकता है। लेकिन शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य कारक भी हैं जैसे सामान्य तथा विशेष योग्यता, अध्ययन के क्षेत्र में रूचि, उसकी अध्ययन संबंधी आदतें, घरेलू तथा विद्यालय आदि का वातावरण तथा आर्थिक परिस्थितियां आदि। शैक्षिक उपलब्धि मनुष्य के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान देती है और शैक्षिक उपलब्धि को प्रमावित करने वाले अनेक कारक है परंतु शोधकर्ता के विचार में सबसे प्रभावी कारक बच्चे की रूचि है जो वह किसी अधिगम क्षेत्र में रखता है। रूचि-सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को संचालित करने वाली केंद्रीय शक्ति है एवं रूचि बच्चों को केवल सीखने में ही सहायता प्रदान नहीं करती बल्कि उनके दृष्टिकोणों प्रवृत्तियों तथा अन्य व्यक्तित्व संबंधित विषेशताओं के निर्माण में सहायक होती है। यह छात्रों के व्यक्तित्व के निर्माण को दिशा निर्देशित करता है।

II. शैक्षिक रूचि

रूचि से तात्पर्य कार्य विशेष के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रिया से है। विद्यार्थी जिस विषय को अपने स्तर के अनुसार सरल व संतुष्टि प्रदायक मानता है, करता है। उसी में अपनी रूचि प्रदर्शित करता है। इसे बालक की शैक्षिक रूचि के रूप में स्वीकृत किया जा सकता है।

शिक्षा के विकास की पूर्णता की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित कर सकता है। शिक्षा से ही व्यक्ति सही रूप में चिंतन करना सीखता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण तथा चरित्र को उत्कृष्ट बनाती है। शिक्षा एक साधन है, जो व्यक्ति के नैतिक, शारीरिक, संवेगात्मक बौद्धिक एवं आंतरिक ज्ञान को बाहर लाने में योग देने वाली एक क्रिया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि व्यक्ति के जीवन में शिक्षा ऐसा परिवर्तन लाती है। जिससे वह निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर हो सकता है।

सामाजिक अन्त:क्रिया कई रूपों में होती है। प्रथम प्रतिद्वन्द्वचता का रूप है जिसमें अविमाज्य लक्ष्य को दो या दो से अधिक व्यक्ति प्राप्त करना चाहते हैं और उसके लिए संघर्श करते हैं। दूसरा रूप सहयोग का है। इसमें सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयत्न होता है। व्यक्तिगत उपलब्धियों के लिए प्रतिद्वन्द्विचता एवं सामूहिक उपलब्धि के लिए सहयोग अत्यावश्यक सामाजिक अन्त:क्रिया है। सामाजिक अन्त:क्रिया का तीसरा रूप संघर्श है। संघर्ष में पारस्परिक विरोध होता है। समंजन चौथा रूप है। समंजन में पारस्परिक अनुकूलन निहित है। सामाजिक अन्तक्रिया का परिणाम हम दूसरों की रुचियों के साथ तादात्म्य के रूप में देखते हैं। संकेत एवं अनुकरण भी प्रभावषाली अन्त:क्रियाएँ हैं। इन अन्त:क्रियाओं से बालक का समाजीकरण होता है।

शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास की एक सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावी प्रक्रिया है, जो उसके ज्ञान, बोध एवं कौशल वृद्धि करती है। शिक्षा प्रणाली को और अधिक सशक्त बनाने में सूचना प्रौद्योगिकी की नवीनतम तकनीकियों, नवाचारों, उपकरणों तथा जनसंचार माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है तथा ज्ञान प्राप्ति एवं कौशल विकास के नये द्वार खोल दिये हैं। शैक्षिक उपलब्धि का महत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यन्त आवश्यक है इससे विद्यार्थी की बौद्धिक स्तर के उन्नयन का पता चलता है।

गैरीसन के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता अथवा विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा की प्रगति का मापन करती है।"

उनन्नीसवीं शताब्दी की शुरूआत से ही शिक्षा में निष्पत्ति परीक्षा पर बल दिया जाने लगा है। निष्पत्ति परीक्षाओं का इतिहास काफी प्राचीन है। आज के युग में तो शिक्षा के सभी स्तरों में इस प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग हो रहा है। जैसे-जैसे शिक्षाशास्त्रियों ने यह अनुभव किया कि मौखिक परीक्षाओं का प्रचलन अब सम्भव नहीं है। वैसे-वैसे इस प्रकार के परीक्षणों का विकास एवं प्रयोग होना प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम् 4840 ई0 में शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष श्री होरक मन ने लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। इसी के परिणाम स्वरूप बोस्टन में लिखित परीक्षाओं के प्रयोग का श्री गणेश हुआ। अमेरिका के न्यूयार्क स्टेट रेजेन्ट ने सन् 4865 में लिखित परीक्षाओं पर जोर दिया। ॥9वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंग्लैण्ड व अमेरिका में व्यापक रूप से लिखित परीक्षाओं का प्रचलन शुरू हुआ। इसी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथण फिशर महोदय ने वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का सूत्रपात किया।

शैक्षिक उपलब्धि परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है, जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल आदि का मापन करते हैं। विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों का अधिगम करने में छात्रों ने कहाँ तक सफलता प्राप्त की है? इसका मापन करने के लिए उपलब्धि परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में छात्र के ज्ञान व समझ में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को उपलब्धि परीक्षण कहते हैं। शैक्षिक उपलब्धि प्राय: शिक्षा के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनसे उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है।

III. निष्कर्ष

यद्यपि वर्षों में कक्षा के माहौल पर व्यापक शोध किया गया है, लेकिन इस शोध में से अधिकांश ने छात्र उपलब्धि पर परिणाम के उपाय के रूप में ध्यान केंद्रित किया है। छात्रों को अपनी पूरी क्षमता के बारे में जानने के लिए, वैज्ञानिक सबूत बताते हैं कि कक्षा पर्यावरण न्यूनतम संरचनात्मक गुणवत्ता का होनाचाहिए और इन संकेतों में संकेत मिलता है कि सभी छात्रशिक्षार्थी मूल्यवान हैं बेशक, कक्षाओं का नया स्वरूप शैक्षिक प्राप्ति, जैसे पाठ्यचर्या के विकास और शिक्षक प्रशिक्षण को बढ़ावा देने वाले बड़े कारकों के एक सेट के संदर्भ में विचार किया जाना चाहिए। यदि अकादमिक विफलता को जमीनी और मानकों में सुधार किया जाना है, तो यह अटलांश्य है कि प्राथमिक स्तर के विद्यालयों को प्रासंगिक मूल्य और उत्तेजक शैक्षणिक वातावरण प्रदान करना चाहिए। छात्रों को विवादित नहीं होना चाहिए, लेकिन उन शिक्षकों से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिनके साथ वे प्रतिष्ठित बौद्धिक समन्वय स्थापित कर सके जो अध्ययन की आदतों को बेहतर बनाने में मदद करेगी।

IV. संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. मंगल डा एस को - शिक्षण व अधियम का ग्रनोविज्ञान टंडन पब्लिशर्स लुधियाना-2007

[2]. पाठक प्रीडी-भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएं अग्रवाल पब्लिकेशन आयरा-2007-608

[3]. शर्मा आरए-शिक्षा पा संघान सूर्या पब्लिकेशन निकट राजकीय इंटर /

[4]. कौल लौकश - शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली विकास पब्लिशिंय हाऊस प्रा लि 200

[5]. Ahluwalia, S. P. (2009). "Manual for Children‟s Self Concept Scale", National Psychological Corporation, Agra.

[6]. Akinsanya, Omolade O., Ajayi, Kassim O. and Saloni, Modupe O. (2011). "Relative Effects of Parents‟ Occupation, Qualification and Academic Motivation of Wardson Students‟ Achievement in Senior Secondary School Mathematics in Ogun State", British Journal of Arts and Social Sciences, Vol.3, No.2, pp. 242-252.

[7]. Alexander, D., & Lewis, L. (2014). Condition of America‟s public school facilities: 2012-13 (NCES 2014-022). Washington, DC: U.S. Department of Education, National Center for Education Statistics.

[8]. Ames, C, & Archer, J. (2007). Mothers' belief about the role of ability and effort in school learning. Journal of Educational Psychology, 18, pp. 409-414.